© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

छायावाद का आविर्भाव

सारिका सक्सेना

M5/104 अल्फा कॉर्प, मेरठ वन कॉलोनी, मोदीपुरम बाईपास मेरठ, उत्तर प्रदेश

सारांश

छायावाद के पूर्व हिन्दी काव्य में दो प्रकार की धाराएँ थी। एक ओर रीतिकालीन शृंगारिककाव्य–रचना होती थी, जिसमें नायक–नायिका के हाव–भाव, केलि–क्रीडाओं और नख–शिख आदि का वर्णन होता था, तो दूसरी ओर कोरी तुकबन्दियाँ की जाती थीं, जिसमें नीरसता और इतिवृतात्मकता के सिवा और कुछ भी न था। पहले प्रकार की कविता से मन ऊब चुका था और दूसरे प्रकार की कविता में मन रम न सका। इसे छोड़कर जब दूसरी ओर काव्य–धारा ने मोड़ लिया और अभिधा को छोड़कर लक्षणा और व्यंजना के सहारे काव्य रचना की जाने लगी, तब इसे देखकर कुछ प्राचीन आलोचक घबड़ा उठे। वे इसे अंग्रेजी की नकल कहने लगे और इसकासम्बन्ध बँगला से जोड़ने लगे। काव्य का यह स्वाभाविक विकास उनकी समझ में नआया, जो समय क प्रवाह में विकसित होता हुआ छायावाद बन गया।

मुख्य शब्द– शृंगारिककाव्य, छायावाद, नीरसता, इतिवृतात्मकता, स्वाभाविक, रोमांटिक मिस्टिसिज्म।

हिन्दी में छायावाद का उद्‌भव किस प्रकार हुआ इसमें विद्वान एकमत नहींहै। कुछ विद्वान इसे बाहर से आया हुआ कहते हैं, तो कुछ स्वदेशी पौधा ही मानतेहैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल इसे अंग्रेजी के रोमांटिक मिस्टिसिज्म (RomanticMysticism) की नकल मानते हैं जो बँगला के माध्यम से ग्रहण किया गया, वेलिखते हैं, ''श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर की उन कविताओं की धूम हुई जो अधिकतरपाश्चात्यढाँचे का आध्यात्मिक रहस्यवाद लेकर चली थीं। पुराने ईसाई संतों केछायाभास(Fantasmatter)तथा यूरोपीय काव्य क्षेत्र में प्रवर्तित आध्यात्मिकप्रतीकवाद (Symbolisim)के अनुकरण पर रची जाने के कारण बंगाल में ऐसीकविताएँ 'छायावाद' कही जाने लगी थीं। यह 'वाद' क्या प्रकट हुआ, एक बने बनायेरास्ते का दरवाजा सा खुल पड़ा और हिन्दी के कुछ नये कवि उधर एक बारगीझुक पड़े। यह अपना क्रमशः बनाया हुआ रास्ता नहीं था। इसका दूसरे साहित्य क्षेत्रमें प्रकट होना, कई कवियों का इस पर एक साथ चल पड़ना और कुछ दिनों तकइसके भीतर अंग्रेजी और बँगला की पदावलो का जगह–जगह ज्यों का त्यों अनुवादरखा जाना ये बातें मार्ग की स्वतंत्र उद्‌भावना नहीं सूचित करतीं।इस प्रकार शुक्लजी छायावाद को हिन्दी का स्वाभाविक विकास मानने सेइन्कार कर देते हैं। इसी प्रकार सन् 1921 के जून अंक में 'सरस्वती' पत्रिका मेंसुशील कुमार का

''हिन्दी में छायावाद' नामक संवादात्मक लेख निकला। संवाद मेंकुल चार व्यक्ति हैं। ललित कला अनुरागिणी ब्रह्मकन्या विद्यालय में उच्च शिक्षाप्राप्त सुशीला देवी, उनके अरसिक, किन्तु लक्ष्मी के कृपापात्र उनके पति हरिकिशोरबाबू, चित्रकार रामनरेश जोशी और कवि सम्राट पंत जी।प्रथम तीन व्यक्तियों मं पंतजी के कविता के आधार पर बनाये गये 'जोशीजी'के एक 'छायाचित्र' पर चर्चा होती है। चित्र के नाम पर बढ़िया फ्रेम में जड़ा हुआस्वच्छ आर्ट पेपर है और उसके नीचे लिखा है 'छाया'। हरिकिशन बाबू के शब्दों में– ''यह तो निर्मल ब्रह्म की विषद् छाया है।'' स्वतः जोशी जी ने उसमें अनन्त कीअस्पष्टता स्पष्ट करने का प्रयत्न किया था। अंत में कवि–सम्राट पंत का आगमनहोता है और वे भी कविता के नाम पर सुशील को एक 'कोरा कागज' प्रस्तुत करतेहैं जिसका आधार जोशीजी का वही छायाचित्र है। हरिकिशोर बाबू के अनुसार –'यह तो वाणी की नीरवता है, निस्तब्धता का उच्छवास् है, प्रतिमा का विलास है।''कवि–सम्राट अपने वक्तव्य में कहते हैं, ''हिन्दी में छायावाद के एक आचार्य ने कहाथा कि छायाबाद का प्रधान गुण है – अस्पष्टता। भाव इतने अस्पष्ट हो जायँ कि वेकल्पना के अनन्त गर्भ में लीन हो जायँ। वे कहते थे कि शब्द, अक्षरों सेबनते हैं और जो अक्षर अविनाषी हैं, वह तो अज्ञेय हैं, अनन्त हैं। अतएव हमें भाषाको वह रूप देना चाहिए जिससे वह नीरव हो जाय। वह कर्णश्रुत न होकरहृदयगम्य हो, इन्द्रियगोचर न होकर आत्मा से ग्राह्य हो।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस विचार का कि 'छायावाद पहले अंग्रेजी काव्यसे बंगाल में आया और बंगाल से हिन्दी में ग्रहण किया गया।' खण्डन आचार्यहजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा किया गया। वे लिखते हैं, 'हिन्दी के कुछ वृद्ध आचार्योको इस प्रकार की योजना पसन्द नहीं आयी थी।''वे पुनः लिखते हैं, ''इसी नवीन प्रकार की कविता को किसी ने छायावादनाम दे दिया है। यह शब्द बिल्कुल नया है। यह भ्रम ही है कि इस प्रकार केकाव्यों को बँगला में छायावाद कहा जाता था और वहीं से यह शब्द हिन्दी में आयाहै। छायावाद केवल चल पड़ने के जोर से ही स्वीकार्य हो सका है, नहीं तो इसश्रेणी की कविता को प्रकट करने में यह शब्द एकदम असमर्थ है। बहुत दिनों तकइस काव्य का उपहास किया गया। और बाद में भी इसे या तो चित्रभाषा शैली याप्रतीक पद्धति के रूप में माना गया था फिर रहस्यवाद के अर्थ में। अतः आचार्यशुक्ल का मत नितान्त भ्रामक है,दूसरी ओर कुछ लोग छायावाद का स्वदेशी वस्तु मानते हुए इसका उद्गमप्राचीन संस्कृत साहित्य की जड़ से स्वीकार करते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल केमत का खण्डन करते हुए पं0 रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है, ''छायावाद हिन्दीकविता का स्वाभाविक विकास था। यह न बँगला से आया न ईसाई सन्तों केछायाभास से। छायावाद तो हमारे संतों की वाणियों द्वारा हिन्दी–भाषियों के जीवनमें सदियों से कम से कम एक हजार वर्षो से होता रहा है, निश्चित रूप से छायावाद अपने देश की युगीन परिस्थतियों, विचारधाराओंआदि के कारण उद्भूत हुआ। यदि यह कहा जाय कि इसे अंग्रेजी साहित्य केचरमोत्कर्ष के प्रभाव से ग्रहण किया गया तो छायावादी कवियों के पूर्व भी लोगों कोअंग्रेजी का ज्ञान था और वे अंग्रेजों के समीपस्थ थे। अतः रोमांटिक काव्य की रचनाऔर पहले ही अन्य लोगों ने क्यों नहीं की? अतएव यह धारणा

बिल्कुल निराधार सीलगती है कि छायावाद अंग्रेजी से हिन्दी में आया और इसके आने मेंबँगला–साहित्य माध्यम था।

छायावाद आरम्भिक दिनों में आंशिक रूप में अंग्रेजी काव्य से प्रभावित हुआथा, पर यह अंग्रेजी–काव्य के प्रभाव के कारण ही उत्पन्न नहीं हुआ था। जहाँ तककेवल प्रभाव की बात है, उसे कुछ अंशों मं स्वीकार किया जा सकता है और स्वयंछायावादी कवियों ने भी इसे स्वीकार किया है। पंत ने 'आधुनिक कवि' की भूमिकामें लिखा है ''मैं उन्नीसवीं सदी के कवियों –मुख्यतः शैली, वर्डस्वर्थ, कीट्स औरटेनिसन से विशेष रूप से प्रभावित रहा हूँ।'' छायावाद के उद्भव के मूल में स्वदेशी भावना, विचार–धारा,युगीन परिस्थितियाँ, परम्पराएँ आदि ही दबाव डालती रहीं।

आचार्यहजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसे भारतीय सांस्कृतिक जागरण का परिणाम स्वीकारते हुए लिखा है, ''छायावाद एक विशाल सांस्कृतिक चेतना का परिणाम था, यद्यपि उसमें नवीन शिक्षा क परिणाम भी स्पष्ट थे, तथापि वह केवल पाश्चात्य् प्रभाव नहीं था।''इसप्रकार द्विवेदी जी छायावाद पर अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव मानते हुए भारतीयसांस्कृतिक परम्परा से उसका उद्भव मानते हैं। अतः यह अपने देश की वस्तु है,जो युगीन परिस्थितियों के कारण उत्पन्न हुई।गाँधोजी के निर्देशन में जो विशाल आन्दोलन चला, उसने सम्पूर्णचेतना को झकझोर डाला। सम्पूर्ण भारतीय चेतना एकदम विद्रोही हो उठी। इसविद्रोह के परिणामस्वरूप कविता भी अपने पूर्ववर्ती काव्य–रूढ़ियों से विद्रोह करउठी और आगे चलकर वह विद्रोह छायावाद में परिवर्तित हो गया।इस प्रकार सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कारणों से भारतीय चेतना सेजो विद्रोहात्मक स्वर फूट निकला उसकी अभिव्यक्ति कविता में हुई जिसे छायावादके रूप में देखा गया। छायावाद के उद्भव पर विचार करते हुए सुप्रसिद्ध विद्वानडा0 शम्भुनाथ लिखते हैं, ''प्रथम महायुद्ध के समय और उसके बाद विद्रोहात्मकपरिवर्तन हिन्दी कवियों में छायावाद के रूप में दिखलाई पड़ा।'' इस विवेचन सेयह बात स्पष्ट होती है कि छायावाद न तो इंग्लैंड से भागकर भारत में आ बसाऔर न बंगाल का राही बनकर हिन्दी–प्रदेश में विश्राम करने लगा, बल्कि इसनेभारत की भूमि में ही जन्म लिया है।

छायावादी काव्य का ऐतिहासिक विकास–क्रम–

भारतेन्दु के मरणोपरान्त खड़ी–बोली ने काव्य–क्षेत्र में अपना चरण रखनाआरम्भ कर दिया, जिससे काव्यधारा एक नयी दिशा की ओर मुड़ गयी। भारतेन्दुयुग और द्विवेदी युग इन दोनों की सन्धि रेखा पर श्रीधर पाठक जैसे कवि काआगमन हुआ जिनसे हिन्दी कविता परिवर्तित होकर एक नये मार्ग पर चल पड़ीऔर धीरे–धीरे ब्रजभाषा का स्थान खड़ी बोली लेने लगी, इसलिए पं0 श्रीधर पाठक के काव्य में छायावादी प्रवृत्तियाँ स्वछन्द प्रेम – भावना,प्रकृति के प्रति मोह, काव्य–शिल्प का नया प्रयोग आदि बातें पायी जाती हैं जिससे इन्हें आचार्य शुक्ल ने 'सच्चे स्वछन्दतावाद' के प्रवर्तक के रूप में स्वीकार कियाहै।''

छायावाद युगीन कवि और काव्य –

छायावादी स्वच्छन्द प्रवृत्तियों का अनुसरण करने और उसे गतिशील बनानेमें पं0 रामनरेश त्रिपाठी और श्री मैथिलीशरण गुप्त का नाम बड़े ही आदर के साथलिया जाता है, उसी प्रकार हिन्दी छायावाद के निर्माण में पं0 श्रीधर पाठक, रामनरेश त्रिपाठी, मैथिलीशरण गुप्त, मुकुटधर पाण्डेय, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, माखनलाल चतुर्वेदीआदि कवियों ने अपना योगदान दिया है। सामान्यतया सन् 1920 से 1940 तकछायावाद युग माना जा सकता है। इस युग में कविता अपनी पूर्ण आभा के साथप्रस्फुटित हुई है। इसे श्रीसम्पन्न करने वाले श्री जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी'निराला' श्री सुमित्रानन्दन 'पन्त' और श्रीमती महादेवी वर्मा जैसे चार महान्

कलाकार प्राप्त हुए । इन चारों के सहयोग से इसकी श्रोछटा चतुर्दिष विकीर्ण होउठी। अतः इस काल को हम छायावाद का जयघोष काल कह सकते हैं, परन्तु प्रसाद का छायावाद युग का प्रतिष्ठापक माना जाने वाला काव्य 'झरना' है जिसका प्रथम संस्करण सन् 1918 ई0 में प्रकाशित हुआ था।

छायावाद के प्रबल आधार स्तम्भ 'निराला' की प्रसिद्ध कविता 'जुही कीकली' सन् 1916 ई0 में लिखी गयी। इन्हीं के समान छायावाद के उन्नायकों में सुमित्रानन्दन पंत कानाम बड़े ही गर्व के साथ लिया जाता है जिनका काव्यारम्भ 'वीणा', एवं 'ग्रन्थि'से होता है। पंत जी का प्रसिद्ध काव्य 'पल्लव' को छायावाद का घोशणा–पत्र कहा जाताहै।सुप्रसिद्ध कवयित्री महादेवी वर्मा का पदार्पण कुछ विलम्ब से हुआ।महादेवीजी छायावाद की चतुर्थ महान स्तम्भ हैं। इनकी कृतियों का प्रथम संग्रह1930 ई0 में 'नीहार' नाम से प्रकाशित हुआ।

छायावाद की सामान्य प्रवृत्तियाँ–

छायावाद युग में नवीन जीवन–मूल्यों की प्रतिष्ठा दृष्टिगत हुई और कविता में नये प्रतिमान भी
स्थापित हुए। निष्कर्षतः यह कहा जासकता है कि छायावाद की जो काव्यधारा दृष्टिगत हुई वह अपने स्वरूप में यूरोपीयरोमांटिसिज्म (Romanticism)की समता में रखी जा सकती है। प्रमुखतया छायावादकी सामान्य प्रवृत्तियाँ में वैयक्तिकता,विस्मय–भावना, प्रेम–व्यंजना और सौंदर्य–भावना, प्रकृति–प्रेम, राष्ट्रीयता की भावना, नारी की महत्ता, कल्पना की प्रचुरता, अतीत प्रेम और पलायन की प्रवृत्ति, नवीन अभिव्यंजना पद्धति का बोध होता है।

छायावादी कवि सम्पूर्ण संसार को नियति के अधीनमानता है। सांसारिक परिवर्तन नियति के द्वारा ही हो रहा है। छायावादोत्तर कवियोंने वैयक्तिक दुःखों से निराश होकर तथा अकेलेपन के कारण नियति की अधीनतास्वीकार की है। अत्यधिक निराशा और अकेलेपन ने इन्हें जीवन के प्रति शंकालुबना दिया है। इसी

कारण ये निराश होकर नियतिवादी भी हो गये हं। इन्होंनेनियति के आगे अपनी पराजय स्वीकार कर ली है और उसी के सहारे अपने कोछोड़ दिया है। अपने को नियति की इच्छा के अधीन स्वीकारते हुए हरिवंश राय 'बच्चन'जी नेलिखा है–

हो नियति, इच्छा तुम्हारी पूर्ण मैं चलता चलूँगा।
पथ सभी मिल एक होंगे तम घिरे गर्म के नगर में।
हैं कुपथ पर पाँव मेरे आज दुनियाँ की नज़र में।

वास्तव में सब नियति के द्वारा ही होता है। नियति के आगे अभागे मनुष्यकी कुछ भी नहीं चल पाती। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि व्यक्तिवादी स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियाँछायावादी काव्य में ही जन्म ले चुकी थीं जिनका विकास उत्तर–छायावादी नयेकवियों द्वारा हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाप्राण निराला : गंगाप्रसाद पाण्डेय
2. छायावादी काव्य का अनुशीलन : डॉ. रामनरायण सोनी
3. छायावाद युग : डॉ. शम्भुनाथ सिहं
4. छायावाद काव्य और दर्शन : डॉ.हरनारायण सिहं
5. छायावाद का सौन्दय शास्त्र : डॉ. विमल कुमार
6. हिन्दी साहित्य और संवेदना : रामस्वरूप चतुर्वेदी
7. छायावाद : नामवर सिहं
8. सरस्वती माहिस पत्रिका
9. माधुरी मासिक पत्रिका
10. अवन्वितका कथालोचनांक